नवाचारों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शैक्षिक विकास की ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन – 100

विषयः संस्कृत (कक्षा–X)

| कार्यालय |

संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरु संभाग, चूरु (राजस्थान)

Email Id : mission100shekhawati@gmail.com

Help Line :01562-250439

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

"हमारा प्रत्येक विद्यार्थी स्पष्ट बोले, सही पढ़े व शुद्ध लिखे"

गोविन्द सिंह डोटासरा

राज्यमंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन एवं देवस्थान विभाग

माननीय शिक्षा मंत्री की कलम से

सम्मानित शिक्षक साथियों,

हम सभी के लिए गौरव का विषय है कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आयाम छू रहा है। इसी परम्परा को अग्रसर रखते हुए विगत सत्रों की भाँति इस सत्र में शेखावाटी ''मिशन–100'' मुहिम का आगाज संयुक्त निदेशक परिक्षेत्र चूरू द्वारा किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी, कर्मठ विद्वान विषयाध्यापकों की लगन और मेहनत से तैयार विषय वस्तु, ब्ल्यू प्रिन्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन के मद्देनजर विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा रहा है।

मैं इन सभी विषयाध्यापकों की कर्मठ टीम को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होनें अपनी दिन–रात की अथक मेहनत, लगन एवं समर्पित कार्यशैली से इस सकारात्मक कार्य को अंजाम दिया है। मेरा सभी संस्था प्रधानों से आग्रह है कि वे सभी विषयाध्यापकों से समन्वय कर इस परीक्षा उपयोगी सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाना सुनिश्चित करें। साथ ही शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि इस विषय वस्तु को ''मिशन–100'' के अनुरुप 100 प्रतिशत विद्यार्थियों तक पहुँचायें एवं तद्नुरुप तैयारी भी करवायें।

आशा करता हूँ कि आपका प्रयास न केवल शेखावाटी क्षेत्र के लिए, बल्कि पूरे प्रदेश में विद्यार्थियों के लिए एक नवाचार होगा जो उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होगा। शिक्षा विभाग में आपका प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक रुप से मूल्यपरक शिक्षा हेतु वृद्धिकारक होगा, जो प्रदेश को देश में सर्वोपरि स्थान दिलाने में कारगर साबित होगा।

शुभकामनाओं सहित

गोविन्द सिंह डोटासरा

राज्यमंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार) पर्यटन एवं देवस्थान विभाग

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,चूरू संभाग, चूरू के नेतृत्व में 'शेखावाटी मिशन – 100' के तहत माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा 2020 में शामिल होने वाले विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा उपयोगी विषय वस्तु एवं प्रश्न कोश तैयार किया जा रहा है।

बोर्ड परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी की अपेक्षा होती है इस दृष्टि से शेखावाटी मिशन–100 द्वारा तैयार की गई विषय वस्तु एवं प्रश्नकोश विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

प्रश्न कोश के निर्माण में जिन विषय विशेषज्ञ शिक्षकों ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है, निसंदेह विद्यार्थियों के सफल हो जाने पर उन्हें जो आंतरिक सुख और संतोष मिलेगा ये सुखद क्षण उनकी स्मृति के अविस्मरणीय पलों में सुरक्षित रहेंगे। प्रश्नकोश निर्माण में जिन भामाशाहों का योगदान रहा है उन्हें भी सकारात्मक पहल के लिए धन्यवाद।

सभी के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ...

हिमांशु गुप्ता IAS
निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर

शुभकामना संदेश

श्रीमान् संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, चूरू की ओर से शुभ कामना संदेश

संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, चूरू कार्यालय के लिए बेहद प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि शिक्षा विभाग चूरू संभाग में कार्यरत सभी विद्वान साथियों के सहयोग से चूरू संभाग ने पिछले बोर्ड परीक्षा परिणामों तथा इन्सपायर अवार्ड में उच्च पायदान पर स्थान प्राप्त किया है। विगत वर्षो की भांति इस बार भी **'शेखावाटी मिशन–100** को जारी रखते हुए इसमें विद्यार्थियों की रूचि के आधार पर छोटे–छोटे प्रश्नों की उत्तर सहित सरल एवं रूचिकर सामग्री अनुभवी विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा तैयार करवाते हुए एक नवीन नवाचार करने का प्रयास किया गया है।

शिक्षा विभाग में बोर्ड परीक्षा में जुटी पूरी टीम से मेरा निवेदन है कि, **शेखावाटी मिशन–100** में तैयार विषयवस्तु को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचातें हुए उसकी तैयारी करवाने का हर सम्भव प्रयास करें ताकि पूर्व की भांति इस बार भी संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि हो सके।

सुरेन्द्र सिंह गौड़
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, संयुक्त निदेशक कार्यालय, चूरू का एक निवेदन

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने राजस्थान की शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक उन्नति एवं बोर्ड परीक्षा उन्नयन हेतु शिक्षा एवं शिक्षण पद्वति में नवाचारों के प्रभावी प्रयोग एवं अपेक्षित परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की है। मंत्री महोदय का कहना है कि विद्यालय में ऐसी व्यवस्था एवं वातावरण तैयार होना चाहिए कि हमारा प्रत्येक विद्यार्थी स्पष्ट बोले, सही पढे व शुद्व लिखे।

उनका मानना है कि जिनको बोलना व लिखना आता है वे सफल इन्सान हैं। एक संस्था प्रधान व विषय अध्यापक यह दोनों कौशल अपने विद्यार्थियों में भाषा के ज्ञान प्रार्थना सभा, बाल सभा, उत्सवों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, भाषण, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं आदि के द्वारा उत्पन्न कर सकता है।

माननीय निदेशक महोदय ने भी अपने पत्र दिनांक 24.09.19 एवं 13.11.19 के द्वारा बोर्ड परीक्षा उन्नयन एवं गुणात्मक अभिवृद्वि हेतु प्रभावी निर्देशन एवं सम्बलन प्रदान किया है। इस क्रम में निदेशक महोदय ने निदेशालय स्तर से बोर्ड परीक्षा तैयारी हेतु "प्रयास" के रूप में बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण विषय वस्तु ` विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध करायी है। इसके साथ ही एक निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्री–बोर्ड परीक्षा के रूप में परीक्षा तैयारी का वातावरण तैयार करने के निर्देश जारी किये हैं।

पिछले शैक्षणिक सत्रों में शिक्षा विभाग द्वारा कई नवावार किए गए जिनसे अभूतपूर्व परिणाम प्राप्त हुए हैं। सत्र 2017–18 में चूरू सम्भाग के तत्कालीन उप निदेशक डॉ. महेन्द्र चौधरी के निर्देशन में 'शेखावाटी मिशन–100' शुरू किया गया था जिसके परिणामस्वरूप 10वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम बहुत शानदार रहा। सत्र 2019–20 में चूरू सम्भाग का सीकर जिला 10वीं के परीक्षा परिणाम में प्रथम रहा, झुन्झुनूं द्वितीय एवं चूरू सातवें स्थान पर रहा। इसी प्रकार 12वीं विज्ञान में सीकर द्वितीय, झुन्झुनूं 5वें एवं चूरू 9वें स्थान पर रहा। आपके व वर्तमान संयुक्त निदेशक श्रीमान् सुरेन्द्र सिंह गौड़ के मार्गदर्शन व प्रेरणा से संयुक्त निदेशक कार्यालय के शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग ने इस वर्ष भी नवाचार करते हुए बोर्ड परीक्षा 2020 हेतु विषय सामग्री तैयार करवाई है। प्रायः यह देखा गया है कि निबन्धात्मक एवं बड़े प्रश्न सामान्य विद्यार्थियों को याद करने में कठिनाई होती है तथा भूलने की सम्भावना रहती है। इसे ध्यान में रखते हुए "शेखावाटी मिशन–100" की अनुभवी विषय विशेषज्ञों की टीम ने ब्लूप्रिंट के आधार पर विषय वस्तु को छोटे–छोटे प्रश्नों में विभक्त कर उनके उत्तर सहित विषय सामग्री तैयार की हैं। छोटे–छोटे प्रश्नोत्तरों के रूप में तैयार यह विषय सामग्री इस बार भी बोर्ड परीक्षा 2020 के लिए उपयोगी एवं मददगार साबित होगी। अगले सत्र 2020–21 के प्रारम्भ होने के साथ ही इसे कक्षा कार्य के रूप में प्रत्येक विषय अध्यापक शुरू करे तो माननीय शिक्षा मंत्री महोदय एवं निदेशक महोदय की भावनाओं के अनुरूप शिक्षण पद्वति में गुणात्मक उन्नति के साथ अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाओं मे 10वीं एवं 12वीं तक के पाठ्यक्रम से ही सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः यह विषय सामग्री विद्यार्थियों का सामान्य ज्ञान बढाने में भी मददगार साबित होगी।

विद्यालय में नामांकन अभिवृद्धि, शिक्षण में गुणात्मक उन्नति एवं बोर्ड परीक्षा परिणाम को संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से बढाने के लिए अगले सत्र के प्रारम्भ से ही इस नवाचार को शुरू करने हेतु कुछ विचार अनुभव की पाठशाला से सीखे हैं।

साथियों एक संस्था प्रधान तथा एक विषय अध्यापक होने के नाते हमारे जेह्न में नवाचार के आइडिया सुबह की चाय की एक–एक घूँट के साथ पनपे, और हम उस स्वप्न को साकार करने में उसी वक्त जुट जाएं तो दुनिया के सबसे बड़े मन्दिर या मस्जिद हमारे शिक्षा (सरस्वती) के मन्दिर के हम पुजारी सब कुछ सम्भव बना सकते हैं। भगवान के मन्दिर में भगवान को पुजारी ही पूजवाता है, ठीक उसी प्रकार हम अध्यापकों को विद्या के मन्दिर को पूजवाना है। कुछ प्रमुख विचार मेरे चिन्तन में एक संस्था प्रधान/विषय अध्यापक होने की कल्पना के रूप में पनप रहे हैं, जिन्हें आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ:–

1. मैं संस्था प्रधान/विषय अध्यापक "शेखावाटी मिशन 100" द्वारा तैयार की गई विषय सामग्री को प्रार्थना सभा, बाल सभा तथा खाली कालांश में ग्रुप बनाकर क्विज प्रतियोगिता, होम प्रोजेक्ट आदि के रूप में याद करवाने का वातावरण तैयार कर बोर्ड परीक्षा की तैयारी सुनिश्चित करूँगा।
2. मैं भाषा (हिन्दी/अंग्रेजी या संस्कृत) का अध्यापक हूँ, इसलिए सत्र के प्रारम्भ में पहले दिन ही कक्षा कार्य की कॉपी में कक्षा स्तर के अनुरूप 50 से अधिक महत्वपूर्ण, विशेष, सामान्य से हटकर अर्थात् भारी शब्द अर्थ सहित लिखवाऊँगा जिससे मेरे विद्यार्थी की भाषागत दक्षता जैसे बोलना, पढना व लिखना प्रभावशाली एवं आकर्षक बने। सतत अभ्यास, नियमित परख, प्रोत्साहन से विद्यार्थी की भाषा दक्षता में उच्च स्तरीय क्षमता विकसित करूँगा।
3. मैं संस्था प्रधान/विषय अध्यापक यह नवाचार अगले सत्र प्रारम्भ से ही शिक्षण कार्य के दौरान प्रत्येक पाठ/विषय–वस्तु पूर्ण होते ही ऐसे छोटे–छोटे अति लघु/लघूत्तरात्मक प्रश्न उत्तर सहित कक्षा कार्य के रूप में तैयार करवाते हुए यह व्यवस्था बनाऊँगा कि मेरे अवकाश पर रहने या अन्य कार्य में लगा होने या खाली कालांश में उस पाठ्य सामग्री को कक्षा के ग्रुप (टीम ए व बी) के मध्य क्विज प्रतियोगिता कक्षा मॉनिटर के माध्यम से आयोजित हो। इससे विषय का रिवीजन होगा, खाली कालांश नहीं रहेगा, विद्यार्थियों में अनुशासन व खुली प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ शैक्षणिक वातावरण का निर्माण होगा।
4. मैं मेरे विद्यार्थी को देश, समाज से जुड़े नवीन घोषणाओं, घटनाओं आदि से अवगत करवाऊँगा तथा उनके प्रति लेखन, भाषण कला को विकसित करूँगा। आम आदमी के रोजमर्रा के जीवन से जुड़े टॉपिक जैसे सिंगल यूज प्लास्टिक–ना बाबा ना, स्वच्छ भारत मिशन, दहेज प्रथा, बाल विवाह, बालश्रम, कन्या भ्रूण हत्या, रेगिंग, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत, महिला अधिकार, कानून की सामान्य जानकारियाँ, सड़क सुरक्षा आदि का समुचित ज्ञान कराऊँगा। हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में इन मुद्दों पर प्रभावशाली शब्दों और विचारो से युक्त निबंध लेखन, वाद–विवाद, आशु भाषण आदि हेतु प्रेरित करूँगा। जिस दिन मैं अवकाश पर रहूँ या अन्य कार्यवश कक्षा अध्यापन नहीं करवा पाऊँ, उस दिन किसी एक विषय पर विद्यार्थियों से रेन्डमली निबंध लिखवाऊँगा और समय पर उसकी जाँच करके उचित निर्देशन प्रदान करूँगा।
5. संस्था प्रधान होने के नाते मैं अवकाश पर जाने वाले शिक्षकों से प्रार्थना पत्र के साथ ही प्रत्येक कक्षा हेतु सम्बन्धित विषय सामग्री देने हेतु निर्देशित करूँगा ताकि उक्त कालांश में विद्यार्थियों को कक्षा कार्य करवाया जाए, जैसे– पेपर लेना, चित्र बनाना, आरेख बनाना, डिबेट करना, अन्त्याक्षरी करवाना आदि। ये कार्य मॉनिटर के माध्यम से सम्पन्न करवाये जा सकते है।
6. मैं विज्ञान का अध्यापक हूँ अतः अपनी जेब में रखे पैन के साथ रखे पैन ड्राइव से सम्बन्धित विषय के विडियो/पीपीटी द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बनाऊँगा। विद्यालय विज्ञान प्रयोगशाला का भरपूर उपयोग करूँगा तथा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करूँगा।
7. मैं विद्यार्थियों को अपनी दैनिक डायरी लिखने हेतु प्रेरित करूँगा इससे उनमें नियमितता, अनुशासन की भावना तथा लिखने व बोलने की क्षमता उत्पन्न करने में सहायता मिलेगी, इससे हमारा प्रत्येक विद्यार्थी "स्पष्ट बोले, सही पढें व शुद्ध लिखे" कथन भी सार्थक होगा।
8. मैं संस्था प्रधान होने के नाते विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों हेतु मोटिवेशनल विडियोज का कलेक्शन करके समय–समय पर दिखाऊँगा ताकि उनमें नयी ऊर्जा, लगन का संचार होता रहे। मैं संस्था प्रधान होने के नाते सभी सहशैक्षणिक गतिविधियों जैसे – विभिन्न जयन्तियों, राष्ट्रीय उत्सव, स्वच्छ भारत मिशन, भाषण, वाद–विवाद, प्रतियागिताएँ आदि रूचिपूर्वक आयोजित करवाऊँगा।
9. एक संस्था प्रधान होने के नाते मैं विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की रूपरेखा अपने जेह्न में रखूँगा तथा उसे अमली जामा पहनाने के लिए सदैव प्रयासरत रहूँगा।

"शेखावाटी मिशन 100" टीम के विषय अध्यापको ने अल्प समय में विषय वस्तु को तैयार किया है। इसमें प्रश्नोत्तरों, लेखन, भाषा, टंकण जैसी त्रुटियां सम्भव है। सभी विषय अध्यापको से निवेदन है कि वे अपने स्तर पर ठीक करते हुए विद्यार्थियों तक पहुँचाने का कष्ट करेंगे तथा संशोधन हेतु "शेखावाटी मिशन 100" टीम को आवश्यक फीड बैक प्रदान करेंगे। आपके प्रयास से प्रदेश में परीक्षा परिणाम संख्यात्मक व गुणात्मक रूप से बढे।

मैं सयुक्त निदेशक कार्यालय चूरू की ओर से प्रयास संस्थान सीकर का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके आर्थिक सहयोग से इस सम्पूर्ण सामग्री का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

शुभकामनाओं सहित।

ओमप्रकाश फगेड़िया

अति.जि.शि.अ.एवं शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी
कार्यालय, संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा)
चूरू सम्भाग, चूरू

कार्यालय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) चूरू संभाग चूरू

विषय– संस्कृत कक्षा 10

1 स्पन्दना– 27	प्रश्न	अंक
1 पाठ्य पुस्तक के अठित गद्यांश का हिन्दी भाषा में अनुवाद	1	(5)
1 पाठ्य पुस्तक के अठित गद्यांश का हिन्दी भाषा में अनुवाद	1	(5)
3 पाठ्य पुस्तक के पठित पद्यांश सप्रसंग संस्कृत व्याख्या	1	(4)
4 पाठ्य पुस्तक के पठित नाट्यांश की सप्रसंग संस्कृत व्याख्या	1	(3)
5 आठ में से छः प्रश्नों के उत्तर संस्कृत माध्यम से लिखना	1	(3)
6 प्रश्न निर्माण	4	(4)
7 दो श्लोक	1	(3)
2 अपठित गद्यांश– 10		
1 समुचित शीर्षक	1	(1)
2 गद्यांश पर आधारित	5	(5)
3 सामान्य व्याकरणात्म प्रश्न	1	(10)
3 व्याकरणात्मक प्रश्न– 25		
1 सन्धि व सन्धि विच्छेद के प्रश्न	2	(4)
2 समास	1	(3)
3 कारण	1	(3)
4 प्रत्यय	2	(4)
5 अव्यय	1	(3)
6 वाच्चय परिवर्तन	3	(3)
7 घटिका प्रश्न	1	(2)
8 वाक्य शुद्धि	1	(3)
4 रचानात्मक कार्य– 18		
1 प्रार्थना पत्र या पत्र	1	(4)
2 संवाद लेखन	1	(4)
3 अनुवाद कार्य	1	(4)
4 चित्र आधारित प्रश्न या रिक्त स्थान पूर्ति	1	(3)
5 कथाक्रम संयोजन	1	(3)
	28	(80)

मिशन शेखावाटी 100

माध्यमिक परीक्षा – 2020

कक्षा – 10

विषय–संस्कृत

1. अधोलिखितस्य पठितगद्यांशस्य हिन्दीभाषया अनुवादं लिखत ।

(1) जाट–जातौ सूरजमल्लः तदेव स्थानं धत्ते यत्खलु स्थानं विदेशीयेषु प्लेटो–नेपोलियन–लूथर इत्यादीनामास्ति । कश्चिदेकः लेखकस्तु तं 'जाट–प्लेटो' इति विरूदेन भूषितवानेव । हिन्दु–इतिहासज्ञाः तं 18 शताब्दस्य 'कनिष्कः' इति मुस्लिमाश्च तं 'अन्तिमः प्रतापी हिन्दू–नरेशः' इति घोषितवन्तः । औपचारिक–शिक्षा–रहितोऽपि सूरजमल्लः वस्तुतः समकालीनेषु वीरेषु भीमः, नीतिज्ञेषु कृष्णः, अर्थशास्त्रज्ञेषु च कौटिल्यः आसीत् इति मन्यते।

(हिन्दी अनुवाद–जाट–जाति में सूरजमल्ल वही स्थान धारण करते हैं, जो स्थान विदेशियों में प्लेटो, नेपोलियन, लूथर आदि का है । किसी एक लेखक ने तो उनको 'जाट–प्लेटो' इस घोषणा से सुशोभित किया है । हिन्दु इतिहासकारों ने उनको 18वीं शताब्दी का 'कनिष्क' और मुसलमानों ने उनको'अन्तिमः प्रतापी हिन्दु–नरेश' इस रूप में घोषित किया । औपचारिक शिक्षा रहित होने पर भी सूरजमल्ल वास्तव में समकालीन वीरों में भीम, नीतिज्ञों में कृष्ण और अर्थशास्त्रज्ञों में चाणक्य थे, ऐसा मानते हैं।)

(2) गंगदत्त आह–"भोः समागच्छ त्वम् । अहं सुखोपायेन तत्र तव प्रवेशं कारयिष्यामि । तथा तस्य मध्ये जलोपान्ते रम्यतरं कोटरमस्ति तत्र स्थितस्त्वं लीलया दायादान्–व्यापादयिष्यसि ।"

(हिन्दी अनुवाद–गंगदत्त ने कहा– "अजी, आप तो आ जाइए । मैं सरलतापूर्वक वहाँ तुम्हारा प्रवेश करा दुंगा । तथा उस कुए के बीच में जल के किनारेपर एक सुन्दर कोटर है वहाँ रहकर तुम आराम से मेरे उन हिस्सा खाने वालों को मार सकोगे ।")

(3) अस्ति गोदावरी तीरे विशालः शाल्मलीतरुः। नानादिग्देशादागत्य रात्रौ पक्षिणो तत्र निवसन्ति। अथ कदाचित् अवसन्नायां रात्रौ अस्ताचलचूडावलम्बिनि भगवति कुमुदिनीनायके चन्द्रमसि लघुपतनक नामा वायसः प्रबुद्धः, कृतान्तमिव द्वितीयम् आयान्तं व्याधम् अपश्यत्। तम् अवलोक्य अचिन्तयत्–"अद्य प्रातरेव अनिष्ट दर्शनं जातम्, न जाने किं अनभिमतं दर्शयिष्यति।" अतः तदनुसरणक्रमेण व्याकुलश्चलितः।

(हिन्दी अनुवाद– गोदावरी नदी के किनारे पर सेमल का एक बहुत बड़ा पेड़ था। वहाँ अनेक दिशाओं और देशों से आकर रात में पक्षियों का समूह निवास करते थे। एक दिन रात समाप्त होने पर देवी कुमुदिनी के स्वामी चन्द्रमा ने अस्ताचल की चोटी पर जब विश्राम किया, तब लघुपतनक नामक कौआ जाग उठा । उसने यमराज के समान आते हुए एक शिकारी को देखा। उसको देखकर वह सोचने लगा–"आज प्रातः काल ही पाप दर्शन, अपशकुन का दर्शन हुआ है। पता नहीं क्या अनिष्ट दिखाएगा।" इसके बाद व्याकुल होकर वह उसके पीछे–पीछे चल पड़ा।)

(4) तदनन्तरम् एकलोऽपि सन् असार–संसार–दुःखदावानल–द्वितीयः क्षुत्पिपासार्दितः बीरमा उत्तरस्यां दिशि अज्ञाते पथि आहिण्डमानः पञ्जाबे फिरोजपुरं प्राप्तः। तत्र केनापि कृपालुना आर्यसमाजस्य अनाथालये प्रवेशितोऽयं बीरमा रोटिकायाः अक्षरज्ञानस्य च युगपत् दर्शन् इदम्प्रथमतया अकरोत् । अयमेव एकस्य पशुचारकस्य महापुरुषत्वं प्रति यात्रायाः प्रस्थानबिन्दुरासीत्। अत्र तस्य हृदि संस्कृताध्ययनेच्छा अङ्कुरिता।

(हिन्दी अनुवाद– उसके बाद अकेला होते हुए भी वह असार संसार का दुःख रूपी दावाग्नि ही जिसका साथी था, भूख और प्यास से पीड़ित बीरमा उत्तर दिशा में अज्ञात रास्ते पर भटकते हुए पंजाब में फिरोजपुर पहँच गया। वहाँ किसी कृपा करने वाले के द्वारा आर्य समाज के अनाथालय में प्रवेश कराये गये इस बालक ने रोटी और अक्षर–ज्ञान का एक साथ दर्शन पहली बार किया था। यही एक चरवाहा का महापुरुषत्व की ओर यात्रा के प्रारम्भ का बिन्दु था । यहाँ उसके हृदय में संस्कृत के अध्ययन की इच्छा उत्पन्न हुई।)

2. अधोलिखितस्य पठितपद्यस्य हिन्दीभाषया अनुवादं लिखत ।

(1) अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

(हिन्दी अनुवाद– हे लक्ष्मण ! सोने से युक्त लंका भी मुझे (राम को) अच्छी नहीं लगती। माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी महत्वपूर्ण होती है।)

(2) प्रियवाक्य–प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

(हिन्दी अनुवाद– प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी प्रसन्न होते हैं। अतः प्रिय वचन ही बोलने चाहिए। बोलने में क्या कंजूसी(दरिद्रता) ?

(3) ललित–कलामयि ज्ञान–विभामयि, वीणा–पुस्तक–धारिणि ।

मतिरास्तान्नो तव पद–कमले, अयि कुण्ठा–विष–हारिणि ।।

(हिन्दी अनुवाद–हे ललितकलाओं से युक्त, हे ज्ञान रूपी कान्ति से युक्त, हे वीणा एवं पुस्तक को धारण करने वाली, हे कुण्ठा रूपी विष को नष्ट करने वाली सरस्वती ! तुम्हारे चरण–कमल में हमारी बुद्धि स्थिर रहे ।)

(4) नन्दामि मेघान् गगनेऽवलोक्य, नृत्यामि गायामि भवामि तुष्टः ।

नाहं कृषिज्ञः पथिकोऽपि नाहं, वदन्तु विज्ञाः मम नामधेयम् ।।

(हिन्दी अनुवाद– आकाश में बादलों को देखकर मैं आनन्दित होता हूँ, नृत्य करता हूँ, गाता हूँ, और प्रसन्न होता हूँ। न तो मैं किसान हूँ, न ही मैं यात्री हूँ, विद्वानों मेरा नाम बताओ ।)

(5) रम्ये क्वचित् सैकत–वप्र–सानौ सुकोमले भास्वति हैमवर्णे ।

प्रातः प्रदोषे च सुखं स्थितानां केषां न चेतांसि विकासवन्ति ।।

(हिन्दी अनुवाद–कहीं पर रमणीय, सुकोमल, कान्तिमान्, स्वर्णिम मिट्टी के टीलों अथवा धोरों की चोटी पर सुबह और रात में सुखपूर्वक बैठे हुए किन लोगों के चित्त प्रफुल्लित नहीं होते हैं ?)

3. अधोलिखितस्य पठितपद्यांशस्य संस्कृतेन व्याख्यां कुरुत ।

(1) दुःखसागरे तरणीयम्, कष्टपर्वते चरणीयम् ।

विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्, लोकहितं मम करणीयम् ।।

(संस्कृत व्याख्या– कविः कथयति यत् अस्माभिः दुःखानां समुद्रे तरणीयम् अर्थात् दुःखेषु विचलितं न भवितव्यम्। कष्टरूपशैले विचरणं कर्तव्यम् । विपत्तिरूपवने भ्रमणं कर्तव्यम्, तथा सदैव मया लोक–कल्याणं कर्तव्यम् ।)

(2) गावः प्रसन्नाः मनुजाः प्रसन्नाः देवाः प्रसन्नाः व्रतदानयज्ञैः ।

किं नाम तद्यन्न मरौ समृद्धं विद्या–समृद्धो भवता विधेयः ।।

(संस्कृत व्याख्या– प्रस्तुतश्लोके मरूप्रदेशस्य समृद्धिविषये वर्णितं यत् मरूप्रदेशे धेनवः तुष्टाः सन्ति, मानवाः सन्तुष्टाः सन्ति, तथा च व्रतेन दानेन यज्ञेन च देवताः सन्तुष्टाः सन्ति । मरूप्रदेशे एतादृशं किं नास्ति येन मरूदेशः सम्पन्नः नास्ति ? अर्थात् पूर्णतः समृद्धः वर्तते । भवद्भिः एषः मरूप्रदेशः विद्यया सम्पन्नः करणीयः ।)

(3) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

मूढैः पाषाण–खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ।।

(संस्कृत व्याख्या– वास्तविकरत्नं किमस्तीति विषये कविः कथयति यत् अस्यां वसुन्धरायां त्रीणि एव रत्नानि सन्ति–जलम् अन्नं सुभाषितञ्चेति। मूर्खजनैः प्रस्तरखण्डेषु 'रत्नम्' इति नाम प्रदीयते ।

(4) नानारत्नैर्मणिभिर्युक्तां हिरण्यरूपां हरिपदपुण्याम् ।

राधासर्वेश्वरशरणोऽहं वारं वारं वन्दे रम्याम् ।।

(संस्कृत व्याख्या– भारतभूमेः स्तुतिं कुर्वन् कवि कथयति यत् विविधमुक्तामाणिक्यप्रवालादिरत्नैः मणिभिश्च भरिताम्, स्वर्णस्वरूपाम्, भगवच्चरणसमलेकृताम् रम्यां च तां भारतवसुधाम् अहं राधासर्वेश्वरस्य शरणागतः कविः पुनः पुनः वन्दे वन्दनां करोमि ।

4. अधोलिखितस्य नाट्यांशस्य संस्कृतेन व्याख्यां कार्या ।

(क) राजा – अथ गृह्णाति ?

प्रथमा– ततस्तं सर्पो भूत्वा दशति।

राजा– भवतीभ्यां कदाचिदस्याः प्रत्यक्षीकृता विक्रिया ?

उभे– अनेकशः।

राजा– (सहर्षम् आत्मगतम्) कथमिव सम्पूर्णमपि मे मनोरथं नाभिनन्दामि ?

(इति बालं परिष्वजते)

बालः – मुञ्च माम्। यावन्मातुः सकाशं गमिष्यामि।

(संस्कृत व्याख्या) राजा – चेत् कोऽपि उत्थापयति ?

प्रथमा तापसी – तदनन्तरं तत् रक्षाकरण्डं तं जनं सर्पं भूत्वा दर्शन करोति ।

राजा– भवतीभ्याम् कदापि एतस्याः विकारः प्रत्यक्षरूपेण दृष्टः ?

उभे– अनेकवारम् ।

राजा–(हर्षपूर्वकम् स्वमनसि) केन प्रकारेण अधुनापि सम्पूर्णमपि मम मनोरथं कथं नहि अभिनन्दनं करोमि ? (इति कथयित्वा बालकस्य आलिंगनं करोति।)

बालकः – त्यज माम् । अहम् अधुना मातुः समीपं यास्यामि।

(ख) प्रथमः भिल्लः – हा भगवन् अद्य कीदृशः समयः आगतः ? प्रतापः अपि स्वदेशं परित्यज्य अन्यत्र प्रस्थितः अस्ति।

द्वितीयः भिल्लः – न जाने अस्य मेवाड़देशस्य भाग्ये किं लिखितम् अस्ति। हे दीनदयालो! परमेश्वर !! त्वमपि अद्य इयान् निष्ठुरः कथं जातः !

तृतीयः भिल्लः – हा धिक् ! वराकस्य समीपे न जीवनसामग्री न च युद्धसामग्री एव विद्यते । मातृभूमेः दुर्दशां स्वचक्षुषा कथं द्रक्ष्यामः ? (रोदिति)

(संस्कृत व्याख्या)

प्रथमः भिल्लः – हाय भगवान् ! अधुना कीदृशः कालः समागतः ? महाराणाप्रतापः अपि स्वदेशं त्यक्त्वा अन्यत्र प्रस्थानं करोति ।

द्वितीयः भिल्लः – एतस्य मेवाड़देशस्य भाग्ये विधिना किं रचितमस्तीति न जानामि। हे दीनदयालो ! परमेश्वर !! त्वम् अपि एतावत् दयाहीनः केन प्रकारेण अभवत् ?

तृतीयः भिल्लः – हा धिक् ! दीनस्य प्रतापस्य समीपे जीवनसाधनानि नास्ति न च समरसाधनम् अर्थात् धन–सैन्यादिकं साधनमपि नास्ति। वयं स्वस्य मातृभूमेः दयनीयां दशां कथं अवलोकयिष्यामः ?

(ग) बालः – अनेनैव तावत् क्रीडयिष्यामि। (इति तापसीं विलोक्य हसति)

तापसी – भवतु, न मामयं गणयति । (पार्श्वमवलोक्य) भद्रमुख, एहि तावत् ! मोचयानेन डिम्भलीलया बाध्यमानं बालमृगेन्द्रम् !

राजा– उपगम्य। (सस्मितम्) अयि भो महर्षिपुत्र!

तापसी– भद्रमुख ! न खल्वयमृषिकुमारः ।

राजा– आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति। स्थान–प्रत्ययात्तु वयमेवंतर्किणः ।

(इति यथाभ्यर्थितमनुतिष्ठति)

(संस्कृत व्याख्या)

बालकः – तावत्पर्यन्तं अनेन सिंहशावकेनैव सह क्रीड़ां करिष्यामि। (इति कथयित्वा तापसीं दृष्ट्वा हसति)

तपसी – अस्तु, एषः मम कथनं न स्वीकरोति। (समीपं दृष्ट्वा) अत्र ऋषिपुत्रेषु कोऽपि अस्ति किम् ? (नृपं दृष्ट्वा) हे श्रेष्ठमुख ! इतः आगच्छतु ! अनेन बालक्रीडया पीड्यमानं सिंहशावकं मुक्तं कुरू।

राजा– समीपं गत्वा। (मन्दहासपूर्वकम्) अयि भो ऋषिकुमारः !

तापसी– हे भद्रमुख! निश्चयेन एषः मुनिपुत्रः नास्ति।

राजा – अयं तु अस्य क्रियाकलापेनैव ज्ञायते यदयम् ऋषिकुमारः नास्ति, तथापि स्थानस्य विश्वासादेव वयं एवं प्रकारेण चिन्तयामः।

5. अधोलिखितेषु अष्टसु षण्णां प्रश्नानां उत्तराणि संस्कृतेन लिखत ।

प्रश्न 1. काव्येषु किं रम्यम् ?
उत्तरम् – नाटकम् ।
प्रश्न 2. कुत्र न रमणीयम् ?
उत्तरम् – भोगभवने ।

प्रश्न 3. मेवाड़ मन्त्री कः आसीत् ?
उत्तरम् – भामाशाहः ।
प्रश्न 4. बालकः सर्वदमनः कस्य सकाशं गन्तुम् इच्छति ?
उत्तरम् –मातुः।
प्रश्न 5. पञ्चतन्त्र केन रचितम् ?
उत्तरम् –पं. विष्णु शर्मणा ।
प्रश्न 6. वेदाः कति सन्ति ?
उत्तरम् –चत्वारः ।
प्रश्न 7. भारतवर्षस्य उत्तरस्यां दिशि किं वर्तते ?
उत्तरम् –हिमालयः ।
प्रश्न 8. मूर्खः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते ?
उत्तरम् –प्रस्तर खण्डेषु ।
प्रश्न 9. सर्पः केन मार्गेण गंगदत्तस्यालयं गतः ?
उत्तरम् –अरधट्टघट्टिकामार्गेण गंगदत्तस्यालयं गतः ।
प्रश्न 10. भामाशाह किं आदाय प्रतापस्य समीपम् आगच्छति ?
उत्तरम् –प्रभूतं धनं।
प्रश्न 11. प्रियदर्शनः कः आसीत् ?
उत्तरम् –सर्पः ।
प्रश्न 12. भिल्लाः किं कर्तुम् उद्यताः भवन्ति ?
उत्तरम् –आत्मबलिदानम् ।
प्रश्न 13. पृथिव्यां कियन्ति रत्नानि ? कानि च तानि ?
उत्तरम् –त्रीणि रत्नानि सन्ति (क) – जलम् , (ख)– अन्नम् , (ग)– सुभाषितं च ।
प्रश्न 14. भारत वैभवम् इति पाठः कस्माद् ग्रन्थाद् गृहितः ?
उत्तरम् –भारत–भारती–वैभवम् ।
प्रश्न 15. केशवानन्द इति नामकरणं केन, कुत्र च कृतम् ?
उत्तरम् –एकेन साधुना, कुम्भमेलायाम् ।
प्रश्न 16. प्रतापस्य राजकाले कः मुगलशासकः आसीत् ?
उत्तरम् –अकबरः ।
प्रश्न 17. सर्पो भूत्वा कः दशति ?
उत्तरम् –अपराजिता औषधिः ।
प्रश्न 18. तापसी केन पदार्थेन निर्मितं मयूरम् आनयति ?
उत्तरम् –मृतिका मयूरम् ।
प्रश्न 19. कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ?
उत्तरम् –कम्बलवन्तम् ।
प्रश्न 20. कस्मिन् युद्धे बहुशौर्यं प्रदर्शितवान् ?
उत्तरम् –हल्दीघाटी युद्धे ।

निर्देशः– प्रश्न संख्या 6–9 पर्यन्तं रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत ।

6. प्रश्न–मया <u>लोकहितं</u> करणीयम्।

उत्तर–मया किं करणीयम्?

प्रश्न–<u>द्रोणः</u> हर्षमुपागतः।

उत्तर–कः हर्षमुपागतः?

प्रश्न–मृगात् सिंहः पलायते।

उत्तर–कस्मात् सिंहः पलायते?

7. प्रश्न–परोपकाराय् सतांविभूतयः।

उत्तर–कस्मै सतां विभूतयः?

प्रश्न–खलस्य विद्याविवादाय भवति।

उत्तर– कस्य विद्याविवादाय भवति?

प्रश्न–आत्महननं महत्पापम् अस्ति।

उत्तर–किं महत्पापम् अस्ति?

प्रश्न– तितिराणां विरावः मधुरः।

उत्तर–केषां विरावः मधुरः?

8. प्रश्न–गंगदतः कूपे प्रतिवसति स्म।

उत्तर– गंगदतः कुत्र प्रतिवसति स्म?

प्रश्न–अयं देशः शुष्कः अपि सरसः।

उत्तर–कः देशः शुष्कः अपि सरसः?

प्रश्न– महाराणाप्रतापः प्राणैः स्वदेशं रक्षितुम् इच्छति।

उत्तर–महाराणाप्रतापः केन स्वदेशं रक्षितुम् इच्छति?

9. प्रश्न–सीता सीमन्तिनीषु शान्ता।

उत्तर–का सीमन्तिनीषु शान्ता?

प्रश्न–मृगात् सिंहः पलायते।

उत्तर–कस्मात् सिंहः पलायते?

प्रश्न– कपोतराजः कपोतान् प्रति आह।

उत्तर–कपोत्राजः कान् प्रति आह?

10. प्रश्नपत्रमतिरिच्य स्वपाठ्यपुस्तकात् द्वौ श्लौकौ लिखत ।

(1)ईर्ष्यी घृणी त्वसन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशंकितः।
परभाग्योपजीवी च षडेते दुःख– भागिनः।।

(2)सुभाषितेन गीतेन बालकानां च लीलया।

मनो न भिद्यते यस्य स वै मुक्तोऽथवा पशुः।।

(3) धन –धान्य – प्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च ।

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।।

(4)परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।

वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।

(5) अहिंसा परमो धर्मस्तथाऽहिंसा परं तपः ।

अहिंसा परमं सत्यं यतो धर्मः प्रवर्तते ।।

11. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत ।

(क) इदं हि विज्ञानप्रधानं युगम् । ' विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानम्' इति कथ्यते । अस्यां शताब्द्यां सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावो दरीदृश्यते । अधुना नहि तादृशं किमपि कार्यं यत्र विज्ञानस्य साहाय्यं नापेक्ष्यते । आवागमने, समाचारप्रेषणे, दूरदर्शने, सम्भाषणे, शिक्षणे, चिकित्साक्षेत्रे, मनोरंजनकार्ये, अन्नोत्पादने, वस्त्रनिर्माणे, कृषिकर्मणि तथैवान्यकार्यकलापेषु विज्ञानस्य प्रभावस्तदपेक्षा च सर्वत्रैवानुभूयते ।

सम्प्रति मानवः प्रकृतिं वशीकृत्य तां स्वेच्छया कार्येषु नियुड्क्ते । तथाहि वैज्ञानिकैरनेके आविष्काराः विहिताः । मानवजातेः हिताहितम् अपश्यद्भिः वैज्ञानिकैः राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणुशक्तेः अस्त्रनिर्माणे एव विशेषतः उपयोगो विहितः । तदुत्पादितं च लोकध्वंसकार्यम् अतिघोरं निर्घृणं च । अयं च न विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणुशक्तेरपराधः, पुरूषापराधः खलु एषः ।

अतोऽस्य मानवकल्याणार्थमेव प्रयोगः करणीय ।

प्रश्नाः

1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।
2. इदं युगं कीदृशम् ?
3. विज्ञानं किम् अस्ति ?
4. कैः आविष्काराः विहिताः ?
5. परमाणुशक्तेः कस्मिन् उपयोगो विहितः ?
6. कः पुरूषापराधः ?
7. इदं हि विज्ञानप्रधानं युगम् – अस्मिन् वाक्ये विशेषण–विशेष्य–सर्वनामपदानां निर्देशः कर्त्तव्यः ।
8. अस्य मानवकल्याणार्थम् एव प्रयोगः करणीयः–अस्मिन् वाक्ये रेखांकित सर्वनामपदस्य स्थाने संज्ञापदस्य प्रयोगं कुर्वन्तु ।
9. वैज्ञानिकैः उपयोगः विहितः – अत्र कः कर्त्ता ?

उत्तराणि

1. विज्ञानस्य महत्वम् ।
2. विज्ञानप्रधानम् युगम् ।
3. 'विशिष्टं ज्ञानं विज्ञानं कथ्यते ।
4. वैज्ञानिकैरनेके आविष्काराः विहिताः ।
5. परमाणुशक्तेः अस्त्रनिर्माणे एव विशेषतः उपयोगो विहितः ।
6. परमाणुशक्तेः लोकध्वंसकार्यम् एव।
7. विशेषणम्– विज्ञानप्रधानम्, विशेष्यः – युगम्, सर्वनाम– इदम् ।

8. विज्ञानस्य अथवा परमाणोः
9. वैज्ञानिकैः

(ख) यदि वयं समाजे राष्ट्रे वा परिवर्तनम् आनेतुम् इच्छामः तर्हि अस्माकं प्रभावः अन्येषाम् उपरि भवेत् । वयं बाह्मवातावरणेन कुप्रभाविताः न स्याम, अपितु वातावरणस्य उपरि अस्माकं प्रभावः स्यात् । अत्र काचित् एका कथा एवमस्ति–

कश्चन कृषकः महिष्याः अस्वास्थ्य–निवारणाय कञ्चित् पशुवैद्यम् औषधं पृष्टवान् । वैधः गुलिकाः दत्तवान्, किञ्च उक्तवान् यत् एकस्यां नलिकायां गोलिकाः स्थापयित्वा भवान् स्वमुखेन वायुं फूत्करोतु, तदा गुलिकाः महिष्याः उदरं गमिष्यन्ति इति । कृषकः अस्तु इति उक्त्वा गतवान्। दिनद्वयानन्तरं सः वैद्यः तं कृषकं मार्गे अस्वस्थरूपेण गच्छन्तं दृष्टवान् । किं सञ्जातमिति पृष्टे सति सः कृषकः उक्तवान्– तया नलिकया अहं फूत्करोमि ततः पूर्वं महिष्या एव फूत्कृतम्, परिणामतः गुलिकाः मम उदरं गताः । इति । अनया कथया बोध्यते यत् बाह्मवातावरणस्य कुप्रभावः येषाम् उपरि न भवति, ते एव सफलाः भवन्ति । नेतारः, मार्गदर्शकाः, समाजशोधकाः च बाह्मं दूषितं वातावरणं परिवर्तयन्ति, न तु स्वयं तेन दूषितेन वातावरणेन प्रभाविताः भवन्ति ।

प्रश्नाः

1. अस्य गद्यावतरणस्य समुचितं शीर्षकं लिखन्तु ।
2. अस्माकं प्रभावः कुत्र स्यात् ?
3. उपर्युक्ता कथा किं बोधयति ?
4. गुलिकाः कस्य उदरे गताः ?
5. कः कं पृष्टवान् औषधम् ?
6. ''कृषकः अस्तु इति उक्त्वा गतवान्'' –अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदम् किमस्ति ?
7. 'अगच्छत्' इति पदस्य समानार्थकं पदं गद्यांशात् अन्विष्य लिखन्तु ।
8. 'नेतुम्' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् अन्विष्य लिखन्तु ।

उत्तराणि

1. अस्माकं प्रभावः वातावरणस्योपरि
2. वातावरणस्योपरि, अन्येषाम् उपरि वा
3. यत् बाह्मवातावरणस्य कुप्रभावः येषाम् उपरि न भवति ते एव सफलाः भवन्ति
4. कृषकस्य
5. कृषकः, पशुवैद्यम्
6. कृषकः
7. गतवान्
8. आनेतुम्

(ग) डॉ. भीमराव–आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम् इष्टवान् आसीत्, परन्तु सः अस्पृश्यः इति कारणतः कश्चन संस्कृतज्ञः आम्बेडकरं संस्कृतं पाठयितुं निराकृतवान्–इति विषयः तु आम्बेडकर–महोदयस्य जीवनसम्बन्धि–पुस्तकेषु लिखितः अस्तिः, सः विषयः तु प्रचारे अपि अस्ति । 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति संविधानसभायां संशोधन–प्रस्तावः आनीतः आसीत्, यस्य प्रस्तावस्य हस्ताक्षर–कर्तृषु प्रस्तावोपस्थापकेषु च डॉ. आम्बेडकरः अपि अन्यतमः आसीत् । अयं विषयः अपि कतिपयवर्षेभ्यः पूर्वं ज्ञातः आसीत् । परम् इदानीं कश्चन नूतनः विषयः प्रकाशम् आगतः अस्ति । नवप्राप्त–प्रमाणैः ज्ञायते यत् डॉ. आम्बेडकरः न केवलं संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान्, न केवलं सः संस्कृतं जानाति स्म, अपितु सः संस्कृतेन भाषते स्म इति । यतः संविधानसभायां यदा राजभाषा–सम्बन्धे चर्चा प्रवर्तते स्म तदा डॉ. आम्बेडकरः पण्डितलक्ष्मीकान्त–मैत्रेण सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् । तत्सम्बन्धे तत्कालीनेषु वार्तापत्रेषु प्रमुखतया वार्ताः प्रकाशिताः आसन् ।

प्रश्नाः

1. उपर्युक्त–गद्यांशस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखन्तु ।

2. डॉ. भीमराव आम्बेडकरः कां भाषां भारतस्य राजभाषां कर्तुम् इष्टवान् ?
3. डॉ. आम्बेडकरः संविधान–सभायां केन सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् ?
4. 'वार्तापत्रेषु वार्ताः प्रकाशिताः आसन्'–इत्यस्मिन् वाक्ये कर्तृपदस्य, क्रियापदस्य, विशेषणस्य च निर्देशः करणीयः ।
5. डॉ. आम्बेडकरः संस्कृतेन भाषते स्म– अत्र रेखाक्तिस्य संज्ञापदस्य स्थाने सर्वनाम–पदस्य प्रयोगः कर्त्तव्यः ।
6. 'पुरातनः' इति पदस्य विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखन्तु ।

उत्तराणि

1. संस्कृतभाषी डॉ. आम्बेडकरः।
2. संस्कृत – भाषाम् ।
3. पण्डित लक्ष्मीकान्त – मैत्रेण सह
4. कर्तृपदम् – वार्ताः
   क्रियापदम् – आसन्
   विशेषणपदम् – प्रकाशिताः
5. सः संस्कृतेन भाषते स्म ।
6. नूतनः

12. अधोलिखित पदयोः सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत ।

1. नयनम् 2. वनौषधिः 3. वागीशः 4. हरिश्शेते 5. मुनिरिति

(ने+अनम्, अयादि)(वन+औषधिः,वृद्धि)(वाक्+ईशः, जश्त्व / व्यंजन)(हरिः+शेते, विसर्ग)(मुनिः+इति, रुत्वविसर्ग)

13. अधोलिखित पदयोः सन्धिं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत ।

1. अनु+ अयः 2. उमा+ ईशः 3. चक्रिन्+ ढ़ौकसे 4. सत्यम्+ वद् 5.रामः+ च

(अन्वयः, यण्)(उमेशः, गुण)(चक्रिण्ढौकसे, ष्टुत्व / व्यंजन)(सत्यं वद, अनुस्वार व्यंजन)(रामश्च, श्चुत्व / व्यंजन)

14. अधोलिखित रेखांकित पदेषु समस्तपदानां विग्रहम् अथवा विग्रहपदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत ।

1.सः प्रतिदिनं देवालयं गच्छति।(दिनं दिनं प्रति, अव्ययीभावः) 2.सः चक्रेण सह गच्छति।(सचक्रम्,अव्ययीभावः)

3. अहं पीताम्बरं धारयामि।(पीतम् अम्बरम्, कर्मधारय) 4. पत्रं च पुष्पं च समर्पयामि । (पत्रपुष्पे, द्वन्द्व)

5. सर्वेकपोताः तत्रोपविष्टाः।(सर्वकपोताः, कर्मधारयः)6.राष्ट्रस्य उत्थानपतने राष्ट्रीयान् अवलम्ब्य भवतः।

(उत्थानं च पतनं च, द्वन्द्व)

15. अधोलिखित रेखांकित पदेषु विभक्तिं तत् कारणं च लिखत ।

1. राजमार्गम् अभितः वृक्षाः सन्ति।(अभितः योगे द्वितीया)2. सः नेत्रेण काणः अस्ति ।(अंगविकार योगे तृतीया)

3. दुर्जनः सज्जनाय ईर्ष्यति ।(ईर्ष्य् योगे चतुर्थी)4. बालकः सिंहात् विभेति ।('भी' धातोः योगे पंचमी)

5. भवनस्य उपरि खगाः सन्ति ।(उपरि योगे षष्ठी)6. जयदेवः संस्कृते चतुरः अस्ति ।(चतुरः योगे सप्तमी)

16. कोष्ठकेषु प्रदत्त–प्रकृतिप्रत्यानुसारं शब्दनिर्माणं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखत ।

1. जीवने परिश्रमस्य..... भवति । (महत् + त्व)
2. मनुष्यः .....प्राणी अस्ति । (समाज + ठक्)
3. नगरे.....वसति । (जन + तल्)
4. सर्वथा अविचारितं कर्म न..(कृ + तव्यत्)

उत्तर –(महत्त्वम्, जनता, सामाजिक, कर्तव्यम्)

17. अधोलिखित वाक्ययोः रेखांकितपदयोः प्रकृतिप्रत्ययौः पृथक् कृत्वा लिखत ।

1. अहंगच्छन् न खादामि ।
2. तस्य माता चतुरा अस्ति ।
3. आदिश्यतां किं करणीयम् ।
4. बुद्धिमान् नरः सर्वत्र मानं लभते ।

उत्तर– (गम्+शतृ, चतुर+टाप्, कृ+अनीयर्, बुद्धि+मतुप्)

18. मञ्जूषायां प्रदतैः अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखत ।

एव, बहिः, विना, कुत्र, इति, अपि, तथा, सहसा, ह्यः, नूनम्

1. ग्रामात् .....नदी प्रवहति
2. क्रियां .....नरः अकर्मण्यः भवति ।
3. कर्मणा.....नरः पूज्यते ।
4. .....वयं बुद्धोद्याने भ्रमितुम् अगच्छाम।
5. .....वा मम माता।
6. ऋषिजनेन सर्वदमन.....कृतनामधेयोऽसि।
7. .....गुरुगतां विद्यां शुश्रूषारधिगच्छति।
8. .....सः सत्यं वदति।
9. असौ प्राणैः .....स्वदेशं रक्षितुम् इच्छति।
10. .....विदधीत न क्रियाम्।

उत्तर – (बहिः, विना, एव, ह्यः, कुत्र, इति, तथा, नूनम्, अपि, सहसा,)

प्रश्नाः अधोलिखित वाक्यानां वाच्य परिवर्तनं कुरुत ।(प्रश्नसंख्या 19–21 पर्यन्तम्)

19. (क) अहं वेदं पठामि। (ख)वयं प्रातः भ्रमामः।

उत्तर– (मया वेदः पठ्यते।, अस्माभिः प्रातः भ्रम्यते।)

20.(क) मया श्लोकाः पठ्यन्ते। (ख)तेन प्रश्नः पृच्छ्यते।

उत्तर– (अहं श्लोकान् पठामि।, सः प्रश्नं पृच्छति।)

21.(क) बालकैः क्रीड्यते। (ख) अस्माभिः पठ्यते।

उत्तर– (बालकाः क्रीडन्ति।, वयं पठामः।)

22. घटिका चित्र सहायतया संस्कृतेन शब्दैः रिक्तस्थाने समयलेखनं कुरुत ।

(क) पंकजः ..... वादने उत्तिष्ठति।

(ख) रमा.....प्रातः भ्रमणाय गच्छति।

(ग) उमेशः .....वादने विद्यालयं गच्छति।

(घ) लता .....वादने पठति।

उत्तर – (एकादश, चतुर्वादने, दश, पंच)

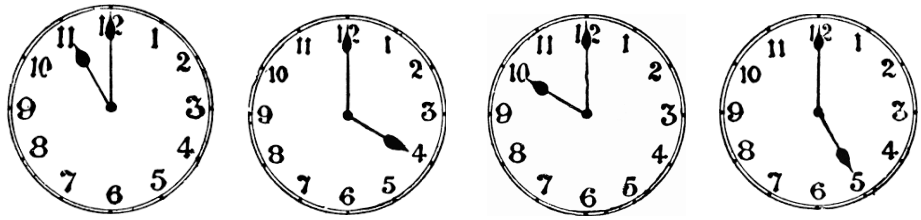

(क) सः ..... विद्यालयात् आगच्छति।

(ख) गणेशः ..... क्रीडति।

(ग) कपिला ..... भोजनं करोति।

(घ) रोहनः ..... शयनं करोति। उत्तर – (द्विवादने, त्रिवादने, सप्तवादने, नववादने)

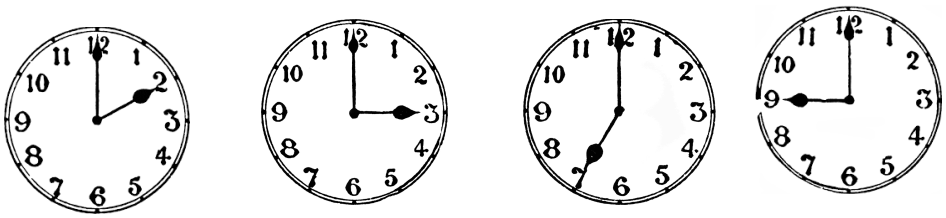

(क) दिनेशः ..... वादने उत्तिष्ठति।

(ख) सः .....वादने मन्दिरं गच्छति।

(ग) उमा ..... वादने पाठं पठति।

(घ) दीपकः .....वादने पाठशालायां गच्छति।

उत्तर – (षड्, पंच, अष्ट, नव)

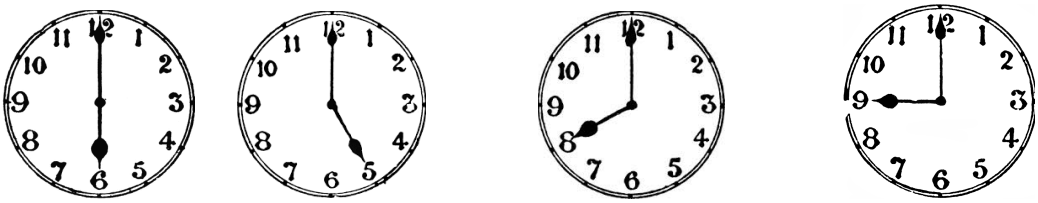

(क) बालकः ..... वादने उत्तिष्ठति।

(ख) सः .....वादने भ्रमणाय गच्छति।

(ग) सुनिलः .....वादने व्यायामं करोति।

(घ) राजेशः .....वादने स्नानादिकं करोति।– (सार्धचतुर्वादने, सार्धपंचवादने, पादोनषड्वादने, सपादसप्तवादने)

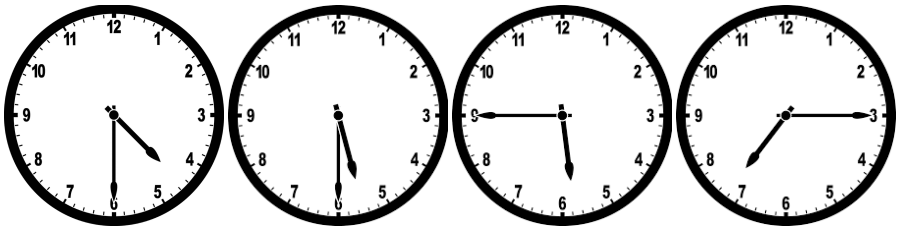

–विद्यालयस्य समयसारिणीम् उचित समयवाचकैः पदैः पूरयित्वा लिखत –

७:३० प्रातः प्रातः .....वादने प्रार्थना।

१०:०० प्रातः प्रातः .....वादने अर्धावकाशः।

१०:१५ प्रातः प्रातः .....वादने पंचमः कालांशः।

१२:१५ प्रातः अपराह्णे .....वादने पूर्णः अवकाशः।

उत्तर–(सार्धसप्तवादने, दशवादने, सपाददशवादने, सपादद्वादशवादने)

– दीपावल्युत्सवस्य अधोलिखिते कार्यक्रमे अंकानां स्थाने शब्दैः समयं लिखत।

सायं (७:३०) ..... वादने सामुदायिक–भवने आगमनम्।

सायं (८:००) .....वादने कविता पाठः।

रात्रौ (९:१५) .....वादने प्रीतिभोजनम्।

रात्रौ (९:४५) .....वादने प्रसादवितरणम्, प्रस्थानम् च।

उत्तर – (सार्धसप्तवादने,अष्टवादने, सपादनववादने, पादोनदशवादने)

– अधोलिखितसारिण्याम् अंकानां स्थाने संस्कृतपदैः समयं लिखत–

प्रातः (६:३०) .....वादने ईशवन्दना।

प्रातः (७:४५) .....वादने उपहारः।

प्रातः (८:१५) .....वादने संस्कृतसम्भाषणाभ्यासः।

प्रातः (११:००) .....वादने वर्तनी–संशोधनम्।

उत्तर– (सार्धषड्वादने, पादोनअष्टवादने, सपादअष्टवादने,एकादशवादने)

23. अधोलिखितानि वाक्यानि शुद्धानि कुरुत ।

1 भवान् तत्र गच्छन्ति। 2 सः कलमात् लिखति।

3 सः रामस्य सह गच्छति। 4 कस्तूरी मृगेण जायते।

5 परोपकाराय सतानां विभूतयः। 6 बालकाः गृहं गमिष्यति।

उत्तर – (गच्छति, कलमेन, रामेण, मृगात्, सतां, गमिष्यन्ति)

24. (1)भवान् राजकीय उच्च–माध्यमिक विद्यालय अलवरस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः नरेन्द्रः अस्ति । भवतः पितुः स्थानान्तरणं अलवरतः जयपुरं प्रति अभवत् । स्थानान्तरण प्रमाण–पत्रं प्राप्त्यर्थं प्रधानाचार्याय प्रार्थना–पत्रम् लिखत।

उत्तर– सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः

राजकीय उच्च–माध्यमिक–विद्यालयः।

अलवरम् (राज.)

विषय– स्थानान्तरण प्रमाण–पत्रं प्राप्त्यर्थम्।

मान्यवर,

विषयान्तर्गतं निवेदनम् अस्ति यत् अहं विद्यालयेऽस्मिन् दशम्यां कक्षायां पठामि। मम पूज्यः जनकः शिक्षकः अस्ति। सम्प्रति तस्य स्थानान्तरणं जयपुरनगरे अभवत्। अहमपि मातृपितृभ्यां सार्धं तत्रैव गत्वा पठिष्यामि। अतो मह्यं स्थानान्तरण–प्रमाण–पत्रं प्राप्त्यर्थं स्वीकृतिं ददातु भवान्।

अतः अहम् आशे यद् श्रीमन्तः मम प्रार्थनां स्वीकरिष्यन्ति।

सधन्यवादः।

दिनाङ्कः 10–12–2019

भवतः आज्ञाकारी शिष्यः

नरेन्द्रः

कक्षा दशमी

अथवा

भवती कनकग्रामवासिनी विशाखा स्वकीयां सखीम् सरलां प्रति 'संस्कृत भाषा शिक्षणम्' इति विषये अधोलिखितं पत्रं मञ्जूषापदसहायतया पूरयित्वा लिखत –

प्राप्तम्, अस्माकम्, विशाखा, पठित्वा, सुगन्धम्, कनकग्रामतः, इच्छति, पृथक्

प्रिये सरले !

.....

नमस्ते।

दिनांकः –10–12–2019

भवत्याः पत्रं .....। भवती संस्कृतभाषायां पठितुम्.....एषा भाषा वैज्ञानिकी। संस्कृतम्.....देशस्य प्रसिद्धा भाषा। भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतं.....कर्तुं तथैव न शक्यते यथा पुष्पेभ्यः .....। अतः भवती अपिसंस्कृतं पठतु एवं च .....प्रचारं करोतु।

भवत्याः प्रिय सखी

.....

(उत्तर – कनकग्रामतः, प्राप्तम्, इच्छति, अस्माकम्, पृथक्, सुगन्धम्, पठित्वा, विशाखा)

(2) भवान् राजकीय उच्च–माध्यमिक विद्यालय तारानगरस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः रवीन्द्रः अस्ति । स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्याय पार्श्वस्थे विद्यालये आयोज्यमानासु क्रीड़ाप्रतियोगितासु धावन्–प्रतिस्पर्धायां भागं ग्रहीतुं प्रार्थना–पत्रम् लिखतु।

उत्तर– सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः,

राजकीय उच्च–माध्यमिक–विद्यालयः।

तारानगरम् (राज.)

विषय– धावनप्रतियोगितायां–भाग–ग्रहणम्।

महोदयाः,

उपर्युक्तविषयान्तर्गतं सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् राजकीय उच्च–माध्यमिक–विद्यालये (तारानगरस्य) 16–9–2019 तः 21–9–2019 दिनांकपर्यन्तं क्रीडा प्रतियोगिताः आयोजिताः भविष्यन्ति।

अहमपि तत्र धावनप्रतियोगितायां भागंग्रहीतुम् इच्छामि। अतः निवेदनम् अस्ति यत् भवन्तः माम् क्रीड़ाप्रतियोगितायां भागं ग्रहीतुम् अनुमतिं प्रदाय अनुग्रहीष्यन्ति।

सधन्यवादः।

दिनाङ्कः 14–9–2019

भवताम् आज्ञाकारी शिष्यः

रवीन्द्रः

कक्षा दशमी

अथवा

पितरं प्रति अधोलिखितपत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदसहायतया पूरयित्वा पुनः उत्तरपुस्तिकायां लिखतु।

परीक्षा, स्वास्थ्यमपि, वृत्तं, पितृचरणेषु, प्रणतिः, सस्नेहमाशिषः, शीघ्रमेव, स्नेहापूरितं

जोधपुरतः

दिनांकः 10–12–2019

परमश्रद्धेयेषु .....

सादरं प्रणतिः।

अत्रकुशलं तत्रास्तु। भवदीयं.....पत्रम् अद्यैव प्राप्तम्। पत्रं पठित्वा गृहस्य सर्वमपि ....ज्ञातवान्। अधुना मम अर्द्धवार्षिकी ..... प्रचलति। अतोऽहमध्ययने दत्तचित्तोऽस्मि। ..... समीचीनम्। परीक्षानन्तरम्..... गृहम् आगमिष्यामि।

पूज्यायाः मातुश्चरणयोः मम .....कथनीया, भगिन्यै गरिमायै .....।

भवदाज्ञाकारी पुत्रः

राकेशः

(उत्तर –पितृचरणेषु, स्नेहापूरितं, वृत्तं, परीक्षा, स्वास्थ्यमपि, शीघ्रमेव, प्रणतिः, सस्नेहमाशिषः)

25. (1)अधोलिखितं संवादं मञ्जूषातः उचितानि पदानि चित्वा पूरयतु –

भोजनं, आपणं, विद्यालयस्य, वस्तूनि, सांयकाले, मातुलः, त्वं, अहम्

माता– राघव! .....किं करोषि ?

राघवः– अहं मम.....गृहकार्यं करोमि।

माता– पुत्र! गृहकार्यान्तरम् .....गत्वा ततः दुग्धं शाकफलानि च आनय।

राघवः– अहं.....पुस्तकं क्रेतुम् आपणं गमिष्यामि तदा दुग्धं शाकफलानि च आनेष्यामि।

माता– सांयकाले न, त्वं तू पूर्वमेव गत्वा आनय ।

राघवः– शीघ्रं किमर्थम् ?

माता– अद्य तव..... आगमिष्यति, अतः..... समयात् पूर्वमेव पक्ष्यामि।

राघवः– मातुलः आगमिष्यति चेत् ..... इदानीम् एव गत्वा .....क्रीत्वा आगच्छामि।

(उत्तरः– त्वं, विद्यालयस्य, आपणं, सांयकाले, मातुलः, भोजनं, अहम्, वस्तूनि,)

(2) मञ्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा 'धूम्रपान निवारणाय' इति विषये गुरुशिष्ययोः संवादं पूरयत–

अस्य, धूम्रपानं, प्रेरणीयाः, दुर्व्यसनस्य, गन्तुम्, तुभ्यं, स्वास्थ्य, मया

कैलाशः – गुरुवर !अहं पश्यामि विद्यालये केचन छात्राः .....कुर्वन्ति।

गुरुः – वत्स ! धूम्रपानं .....विनाशकमस्ति।

कैलासः– गुरुवरः कोऽस्य .....निवारणोपायः।

गुरुः – पुत्र ! जनजागर्तिरेव .....दुर्व्यसनस्य निवारणोपायः।

कैलाशः– गुरुवर! .....किं करणीयम् ।

गुरुः – वत्स ! महत्त्वपूर्णं विषयोपरि वार्तां कर्तुं .....धन्यवादं ददामि।

(उत्तरः –धूम्रपानं, स्वास्थ्य,दुर्व्यसनस्य,अस्य, मया, प्रेरणीयाः, गन्तुम्, तुभ्यं,)

(3) **मंजूषातः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा संवादं पूरयतु।**

पिता– रमेश ! तव..... कथं प्रचलति ?

रमेशः– हे पितः !अध्ययनं तु..... प्रचलति।

पिता– कोऽपि विषयः एतादृशः अस्ति यस्मिन् त्वं .....अनुभवसि ?

रमेशः– आम्! .....मम स्थितिः सम्यक् नास्ति। यतोहि अस्माकं विद्यालये इदानीं गणितस्य..... नास्ति।

पिता– त्वं पूर्वं तु माम् अस्मिन् .....न उक्तवान्।

रमेशः– पूर्वं तु अध्यापक–महोदयः आसीत् परं एकमासात् पूर्वमेव तस्य.....अन्यत्र अभवत्।

पिता– अस्तु। अहं तव कृते गृहे एव गणिताध्यापकस्य .....करिष्यामि।

रमेशः– धन्यवादाः।

(उत्तरः– अध्ययनं, समीचीनं, काठिन्यम्, गणिते, अध्यापकः, विषये स्थानान्तरणम्, व्यवस्थाम्)

26. अधोलिखितेषु षड्सु वाक्येषु केषाञ्चन चतुर्णां वाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत ।

1 वे दोनों बाजार जाते हैं।

2 हम सब पढ़ेंगे।

3 तुम विद्यालय जाओ।

4 रमेश पिता के साथ जयपुर जाता है।

5 गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।

6 गाँव के चारों ओर वृक्ष हैं।

7 रमा शेर से डरती है।

8 वे सब पढ़ रही हैं।

(उत्तरः– 1 ते आपणं गच्छतः। 2 वयं पठिष्यामः। 3 त्वं विद्यालयं गच्छ। 4 रमेशः जनकेन सह जयपुरं गच्छति। 5 गुरुः शिष्याय कुध्यति। 6 ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति। 7 रमा सिंहात् विभेति। 8 ताः पठन्ति।)

27. अधः प्रदत्तचित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्त शब्दानां सहायतया संस्कृतेन षड्वाक्यानि निर्माय लिखत ।

खगाः, फलानि, छाया, पर्यावरणं, उपयोगिता, अस्मिनयुगे, प्राणवायुं, दृश्यते, प्राप्नुमः

1 अस्मिन् युगे वृक्षाणाम् अत्यधिकं महत्त्वम् अस्ति। 2 वृक्षाः अस्मभ्यं प्राणवायुं प्रयच्छन्ति।

3 वृक्षैः पर्यावरणं शुद्धं भवति। 4 वृक्षात् वयं फलानि लभावहे। 5 वृक्षाः अस्मभ्यं छाया यच्छन्ति। 6 खगाः वृक्षेषु तिष्ठन्ति। 7 जनाः वृक्षाणां कर्तनं नैव कुर्युः।

बालकाः, प्रश्नाः, गणितस्य, समयः, सा, स्व, श्यामपट्टः, अध्यापिका, लिखितम्, पृच्छति

1 एतस्मिन् चित्रे एका गणितस्य अध्यापिका गणितं पाठयति। 2 घटिकायंत्रानुसारं नववादनः समयः अस्ति।

3 बालकाः प्रश्नान् लेखितुम् उत्सुकाः सन्ति। 4 अध्यापिकाः पार्श्वे श्यामपट्टः अस्ति।

5 सा प्रश्नान् श्यामपट्टे लिखति। 6 अध्यापिका प्रश्नानाम् पृच्छति।

अथवा

(1) मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयित्वा अनुच्छेदं लिखत ।

उत्तरदिशायां, उत्तराखण्डः, वर्षपर्यन्तं, प्रान्तानि, कथ्यते, भारतमातुः

1 हिमालयः अस्माकं.....गर्वोन्नतं मस्तकमिव शोभते।

2 अयम् अस्माकं देशस्य .....स्थितोऽस्ति।

3 अत्र .....हिमं भवति।

4 अतः अयम् हिमालयः .....।

5 हिमालयस्य क्रोडे कश्मीरः, हिमाचलप्रदेशः....., मेघालयः, मणिपुरः, असमः आदयः भारतस्य..... सन्ति।

(उत्तर – भारतमातुः, उत्तरदिशायां, वर्षपर्यन्तं,कथ्यते, उत्तराखण्डः, प्रान्तानि)

(2) मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयित्वा अनुच्छेदं लिखत ।

विद्यया, पात्रता, धनं, मनुष्याय, अपि, धनम्,

1 विद्या प्रधानं .....अस्ति।

2 किं पुण्यं, किं पापम् इति ज्ञानं .....एव भवति।

3 स्वकर्तव्यज्ञानम्.....विद्यया एव भवति।

4 विद्या.....विनयं ददाति।

5 विनयात् मानवः.....याति।

6 पात्रत्वात् मनुष्यः .....प्राप्नोति।

(उत्तर –धनम्, विद्यया, अपि, मनुष्याय, पात्रतां, धनं)

28. अधोलिखितवाक्यानि क्रमरहितानि सन्ति । यथा क्रम संयोजनं कृत्वा लिखत ।

(1) क्रमरहितवाक्येषु कथा

(1) घटे जलम् अल्पम् आसीत्।

(2) तस्य मस्तिष्के एकः विचारः समागतः।

(3) एकः पिपासितः काकः आसीत्।

(4) सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम् ।

(5) सः वने एकं घटम् अपश्यत् ।

(6) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत्।

कथाक्रम–संयोजनम्

(1) एकः पिपासितः काकः आसीत्।

(2) सः वने एकं घटम् अपश्यत् ।

(3) घटे जलम् अल्पम् आसीत्।

(4) तस्य मस्तिष्के एकः विचारः समागतः।

(5) सः पाषाणखण्डानि घटे अक्षिपत्, जलं च उपरि आगतम् ।

(6) जलं पीत्वा काकः ततः अगच्छत्।

(2) क्रमरहितवाक्येषु कथा

(1) मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत्।

(2) एकदा सः जाले बद्धः।

(3) सिंहः जालात् – मुक्तः भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(4) एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(5) सः सम्पूर्णं प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात् न मुक्तः।

(6) तदा तस्य स्वरं श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।

कथाक्रम–संयोजनम्

(1) एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(2) एकदा सः जाले बद्धः।

(3) सः सम्पूर्णं प्रयासम् अकरोत् परं बन्धनात् न मुक्तः।

(4) तदा तस्य स्वरं श्रुत्वा एकः मूषकः तत्र आगच्छत्।

(5) मूषकः परिश्रमेण जालम् अकृन्तत्।

(6) सिंहः जालात् – मुक्तः भूत्वा मूषकं प्रशंसन् गतवान्।

(3) क्रमरहितवाक्येषु कथा

(1) तदा तस्य मुखस्था रोटिका अपि जले पतति।

(2) एकदा कश्चित् कुक्कुरः एकां रोटिकां प्राप्नोत्।

(3) तदा सः नदीजले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।

(4) सः कुक्कुरः रोटिकां प्राप्तुं तेन सः युद्धार्थं मुखम् उद्घाटयति।

(5) सः रोटिकां मुखे गृहीत्वा गच्छन् आसीत्।

(6) स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं कुक्कुरं मत्वा सः तस्य रोटिकां प्राप्तुम् अचिन्तयत्।

कथाक्रम–संयोजनम्

(1) एकदा कश्चित् कुक्कुरः एकां रोटिकां प्राप्नोत्।

(2) सः रोटिकां मुखे गृहीत्वा गच्छन् आसीत्।

(3) तदा सः नदीजले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।

(4) स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं कुक्कुरं मत्वा सः तस्य रोटिकां प्राप्तुम् अचिन्तयत्।

(5) सः कुक्कुरः रोटिकां प्राप्तुं तेन सः युद्धार्थं मुखम् उद्घाटयति।

(6) तदा तस्य मुखस्था रोटिका अपि जले पतति।

(4) क्रमरहितवाक्येषु कथा

(1) सः प्रतिदिनं बहून् पशून् हत्वा खादति।

(2) एकदा यदा शशकस्य क्रमः आगतः, तस्य विलम्बागमनेन सिंहः कुपितः जातः।

(3) सिंहः जले स्वप्रतिबिम्बं दृष्ट्वा तस्मिन् कूपे अकूर्दत्।

(4) कस्मिंश्चित् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(5) तदा सर्वे पशवः विचारं कृत्वा प्रतिदिनं सिंहस्य पार्श्वे भोजनार्थम् एकं पशुं प्रेषयितुं निश्चितवन्तः।

(6) तदा चतुरः शशकः सिंहं कूपस्य समीपम् अनयत्।

कथाक्रम–संयोजनम्

(1) कस्मिंश्चित् वने एकः सिंहः वसति स्म।

(2) सः प्रतिदिनं बहून् पशून् हत्वा खादति।

(3) तदा सर्वे पशवः विचारं कृत्वा प्रतिदिनं सिंहस्य पार्श्वे भोजनार्थम् एकं पशुं प्रेषयितुं निश्चितवन्तः।

(4) एकदा यदा शशकस्य क्रमः आगतः, तस्य विलम्बागमनेन सिंहः कुपितः जातः।

(5) तदा चतुरः शशकः सिंहं कूपस्य समीपम् अनयत्।

(6) सिंहः जले स्वप्रतिबिम्बं दृष्ट्वा तस्मिन् कूपे अकूर्दत्।

शेखावाटी मिशन – 100

मार्गदर्शक एवं प्रेरणा स्रोतः–

डॉ. महेन्द्र कुमार
सेवा निवृत संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री सुरेन्द्र सिंह गौड़
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री घनश्याम जाट
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुंझुनू

श्री संपतराम बारूपाल
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
चूरू

संभाग स्तरीय परीक्षा परिणाम उन्ययन समिति

श्री ओम प्रकाश फगेड़िया
अति. जि.शि.अ. कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्रीमति बबीता ढ़ाका
सहायक निदेशक
कार्यालय मुख्य जि.शि. अधिकारी
झुंझुनू

श्री राकेश कुमार तेतरवाल
सहायक निदेशक
कार्यालय मुख्य जि.शि. अधिकारी
सीकर

श्री नरेश बिस्सु
सहायक निदेशक
कार्यालय मुख्य जि.शि. अधिकारी
चूरू

संकलन, सहयोग एवं सुझावः–

श्री महेद्रसिंह बड़सरा
अति. जि.शि.अ. कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री अमर सिंह
जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)
माध्यमिक शिक्षा, झुंझुनू

श्री मुकेश कुमार मेहता
जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)
माध्यमिक शिक्षा, सीकर

श्री रमेश पुनियाँ
अति. जिला परियोजना समन्वयक,
समसा, चूरू

श्री रिछपाल सिंह
अति. जिला परियोजना समन्वयक,
समसा, सीकर

श्री सुभाष चन्द्र मीणा
अति. जिला परियोजना समन्वयक,
समसा, झुंझुनू

श्री सांवरमल गहनोलिया
शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी, चूरू

श्री हरदयालसिंह
शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी, सीकर

श्री कमलेश तेतरवाल
शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी,झुंझुनू

श्री महेन्द्र सारण, प्रधानाचार्य
राउमावि भोजाण राजगढ चूरू

श्री त्रिलोक चन्द्र, वरिष्ठ अध्यापक
राउमावि, आबसर, चूरू

श्री शिशुपाल छिरंग, प्र..अ.
राबाउप्रावि नाकरासर, चूरू

श्री प्रमोद कुमार सैनी
कनिष्ठ सहायक
समसा, चूरू

श्री पुरूषोतम मीणा, सप्रअ
कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

श्री रूकमानन्द, वरिष्ठ सहायक
कार्यालय संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा चूरू सम्भाग, चूरू

संरक्षक

श्री रामकरण फगेड़िया
सेवा निवृत प्रधानाचार्य

श्री मुकन्दाराम नेहरा
सेवा निवृत प्रधानाचार्य

कार्यालय :– संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरु संभाग, चूरु (राजस्थान)

REET 2018 शिक्षक भर्ती में प्रयास राज्य में फिर बना सिरमौर...

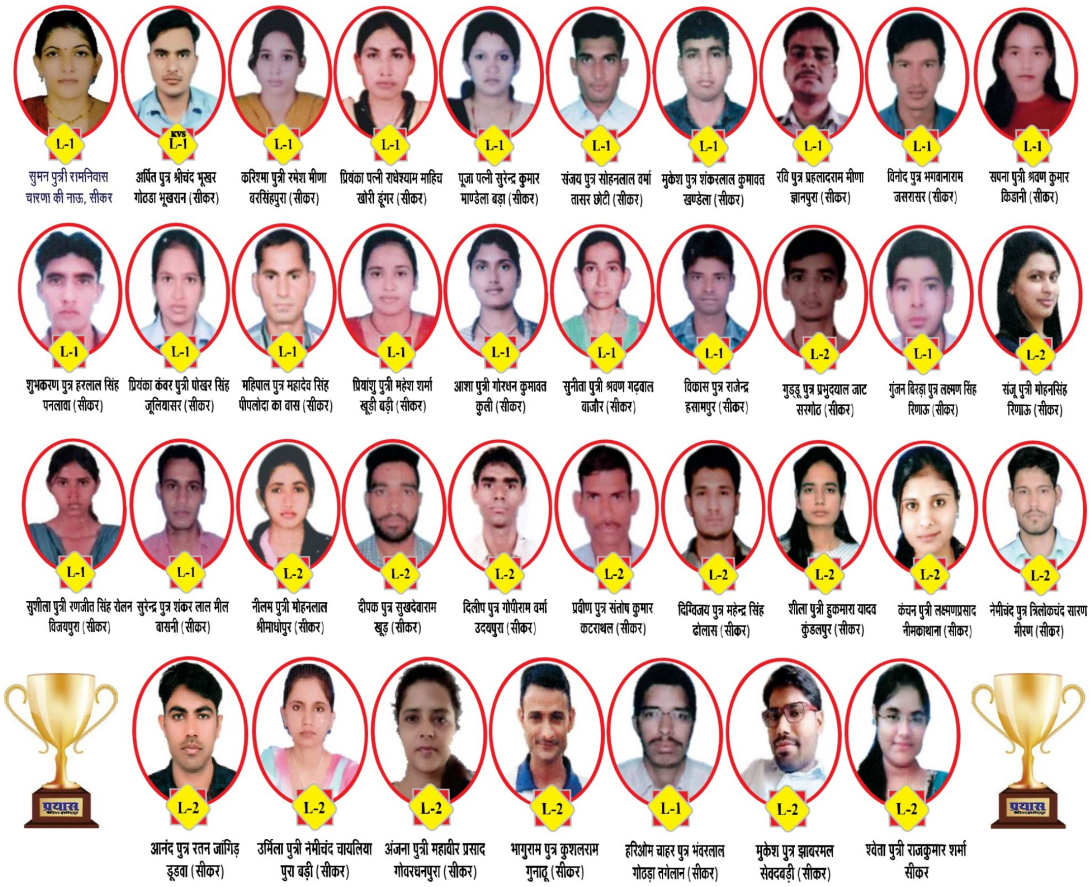

प्रयास परिवार की Banking/SSC में नई पहल...

BANK SSC

MAXIMUS Career Institute

प्रयास कैरियर इंस्टीट्यूट, नवलगढ़ रोड़, सीकर Mob.- 9772591148 7728027533

This document was created with Win2PDF available at http://www.win2pdf.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.
This page will not be added after purchasing Win2PDF.